(खं) 1991–92 से 28.7.1994 तक केन्द्र सरकार ने इस योजना के अंतर्गत 498.71 लाख रुपये की राशि जारी की।

राष्ट्रीय वस्त्र निगम लिमिटेड और ब्रिटिश इण्डिया टैक्सटाइल्स कारपोरेशन हेतु परिवर्तित नीति की स्वीकृति

1080. **श्री आस मोहम्मद :** क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने राष्ट्रीय वस्त्र निगम लिमिटेड और ब्रिटिश इंडिया टेक्सटाइल कारपोरेशन हेतु पूर्णतया परिवर्तित नीति की स्वीकृति प्रदान की है ;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और राष्ट्रीय वस्त्र निगम लिमिटेड और ब्रिटिश इंडिया टेक्सटाइल्स कारपोरेशन हेतु यह नीति कहां तक सहायक सिद्ध होगी ;

(ग) गत तीन वर्षों के दौरान प्रति वर्ष उक्त निगमों के आधुनिकीकरण हेतु कुल कितनी धनराशि दी गई और अब तक की निगम-वार उपलब्धि क्या रही है ;

(घ) क्या सरकार ने आठवीं योजनावधि में इन निगमों के आधुनिकीकरण हेतु निधियों के आवंटन के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी है ;

(ङ) यदि हां, तो इस संबंध में निगम-वार ब्यौरा क्या है ; और

(च) आठवीं योजनावधि के पहले वर्ष में लागू की गई आधुनिकीकरण योजना का ब्यौरा क्या है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जी० वेंकटस्वामी) : (क) और (ख) सशोधित सर्वांगीण सुधार योजना अभी तैयार की जा रही है।

(ग) वर्ष 1992–93 के दौरान आधुनिकीकरण के लिए नेशनल टैक्सटाइल कारपोरेशन (एन.टी.सी.) को 20 करोड़ रू० की राशि रिलीज की गई थी लेकिन इस राशि को रोके रखा गया था। तथापि, नकदी की जटिल समस्या को ध्यान में रखत हुए जब तक सरकार संशोधित सर्वांगीण सुधार योजना पर विचार नहीं कर लेती तब तक एन. टी.सी. को वेतन और मजदूरियों का भगतान करने के लिए इस राशि को इस्तेमाल करने की विशेष अनुमति दी गयी थी। पिछले तीन वर्षों के दौरान ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन को आधुनिकीकरण के लिये कोई निधि रिलीज नहीं की गई।

(घ) और (ङ) सरकार ने एन. टी.सी. की मिलों के आधुनिकीकरण के लिए 532.78 करोड़ रु. का निवेश करने का अनुमोदन किया है, जिसका वित्त पोषण 8वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान विभिन्न स्रोत से किया जाएगा। इसमें से 83.96 करोड़ रु. राशि की बजटीय सहायता से परिकल्पना की गई है। बी.आई.सी. की वस्त्र मिलों के आधुनिकीकरण के लिए 29 करोड़ रु. के परिव्यय का अनुमोदन दिया गया था।

(च) आठवीं पंजवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष के दौरान अर्थात 1992–93 के दौरान एन.टी.सी. ने आधुनिकीकरण पर 56.72 करोड़ रु. की राशि खर्च की थी। ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन की आधुनिकीकरण पर कोई राशि नहीं खर्च की गई।

कपास का निर्यात

1081. **श्री राम जेठमलानी :** क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने प्रति वर्ष कपास के पांच लाख गट्ठरों का निर्यात स्थाई रूप से करने का निर्णय लिया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि कपास के बदले धागों, कपड़ों और परिधानों के निर्यात से और अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है और

इससे देश के युवकों को रोजगार के और अधिक अवसर प्रदान कराये जा सकते हैं ;

(ग) यदि नहीं, तो सरकार की इस पर क्या प्रतिक्रिया है ; और

(घ) सरकार द्वारा स्थाई रूप से कपास का निर्यात किय जाने का निर्णय लेने के क्या कारण है और इस निर्णय के फलस्वरूप देश को क्या लाभ होने की संभावना है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जी. वेंकट स्वामी) : (क) जी हां।

(ख) जी हां।

(ग) प्रश्न नहीं उठता।

(घ) कपास के निर्यात की एक दीर्घकालिक नीति है जिसका अनुमोदन वर्ष 1990 में मंत्रीमंडल कि निर्यात नीति संबंधी समिति द्वारा किया गया था, इस नीति में यह निर्धारित है कि प्रत्येक कपास मौसम में कपास की 5 लाख गांठों का निर्यात किया जाएगा तथा उसके बाद की रिलीज कपास की घरेलू उपलब्धता तथा कीमतों को ध्यान में रखने के बाद की जाएगी। इस निर्यात की नीति के तीन मुख्य उद्देश्य हैं : (क) कपास की कीमतों को स्थिर बनाना जो कि उपजकर्ताओं और उद्योग दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं ; (ख) कपास उपजकर्ताओं को लाभप्रद कीमतें सुनिश्चित करना ; तथा (ग) कपास के एक स्थाई सप्लाईकर्ता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में भारत की उपस्थिति बनाए रखना।

कपास की बर्बादी

1082. **श्री राम जेठमलानी :** क्या **वस्त्र मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में कपास की ओटाई सुविधा के अभाव में प्रति वर्ष कपास की 5 लाख गांठें बर्बाद हो जाती हैं ;

(ख) यदि नहीं, तो इस संबंध में सरकार का क्या मूल्यांकन है ;

(ग) क्या यह भी सच है देश में कपास उत्पादन की औसत दर अन्य कपासोत्पादक देशों की तुलना में काफी कम है ; और

(घ) यदि हां, तो देश में प्रति हैक्टेयर कपास का कितना उत्पादन होता है और विश्व में कपास की औसत उत्पादन दर कितनी है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जी. वेंकट स्वामी) : (क) और (ख) जी, नहीं। तथापि, कपास उपजाने वाले कुछ क्षत्रों में संसाधन सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण किसानों को विपणन तथा संसाधन के लिए बहुत दूर ले जाना पड़ता है, जिसके कारण उनको ले जाने में काफी नुकसान हो जाता है। ऐसे अपशिष्ट से होने वाली क्षति के सही आकलन उपलब्ध नहीं है।

(ग) और (घ) जी, हां। भारत में कपास का औसत उत्पादन विश्व में कपास उपजाने वाले प्रमुख देशों की तुलना में कम है जैसा कि अन्तर्राष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति द्वारा दिए गए आंकड़ों से स्पष्ट पता चलता है।

देश का नाम	उपज (किलोग्राम प्रति हैक्टेयर)	
	1992–93	1993–94
1	2	3
1. इजरायल	1771	1688
2 आस्ट्रेलिया	1510	1408
3 सीरिया	1094	1037
4. मिस्र	1001	906